उपसंहार

उपसंहार

शिवानी पाण्डे आजकी सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार है। हिंदी साहित्य को उन्होंने जो सेवा की है वह मौलिक है। उनके उपन्यासोंका अध्ययन करनेपर हम इस निष्कर्षपर पहुँचते हैं कि शिवानी स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्यकी सशक्त एवं लोकप्रिय लेखिका है।

पहले अध्यायमें शिवानीका जीवनवृत्तान्त दिया गया है। शिवानीका जन्म अत्यंत समृध्द, सुसंस्कृत परिवारमें हुआ था। उनके "पिता अश्विनीकुमार पाण्डे" राजकोटके "राजकुमार कॉलेज में प्रोफेसर थे। शिवानीका जन्म १७ अक्तूबर, १९२३ को प्रातःकालके समय हुआ। राजकोटके पश्चात शिवानीके पिता जूनागढ, मैसूर, जसदन, ओरछा दतिया आदि राजघरानोंमें राजकुमारोंके पारिवारिक राजगुरु रहें।

शिवानीकी माता "लीलावती पाण्डे" महान विदुषी थी। हिन्दी, गुजराथी और संस्कृत पुस्तकोंका समृध्द पुस्तकालय उनके घरमें था। शिवानीके नाना "डॉ. हरदत्त पंत" लखनऊके तत्कालिन ख्यातिप्राप्त सिविल सर्जन थे। नानाजीने छोटिसी झोपडीमें जो अस्पताल शुरु किया, वही आज भी बलरामपूर अस्पतालके नामसे विख्यात है।

शिवानीकी नानी भी नानाकी तरह लखनऊके समाजमें आदर्श आचरण और समाजसेवाके कारण बहुचर्चित थी। शिवानीके पितामह काशी विश्वविद्यालयमें धर्म प्रचारक थे। संस्कृतके प्रकांड पंडित और दबंग वकील थे। शिवानी तथा उनके भाई-बहनोंकी शिक्षा-दिक्षा गुरुदेव रविंद्रनाथ ठाकुरके शान्तिनिकेतन में हुई थी। आशुकाव्य स्पर्धामें गुरुदेव के हाथोंसे शिवानीको प्रथम पुरस्कार मिला था। वह पुरस्कार "नोबेल पुरस्कार" से कम महत्वका नहीं था।

शांतीनिकेतन में आचार्य हजारीप्रसाद व्दिवेदी उनके गुरु थे। उन्होने शिवानीके कान उमेठकर लेखनिकी सही पकड़ सिखाई थी। नृत्यशिक्षक शान्तीदा तथा मृणालिनी साराभाई थे। शान्तीनिकेतनमें उन्होने रविंद्र तथा हिंदुस्थानी संगीत की शिक्षा पायी। बचपनसे शिवानीको घुड़सवारीका शौक था। शिवानी जब बी.ए. हो गई तब उनका विवाह हो गया था। उनके पति श्रीयुत पंत एक उच्च-पदस्थ अधिकारी थे। वे सिध्दहस्त जादूगर भी थे। शिवानीके एक पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं। वे सभी उच्च-शिक्षा प्राप्त हैं।

दूसरे अध्यायमें शिवानिकी सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्मिक परिस्थितिका चित्रण है। साहित्यकार को उसके समकालीन परिस्थितिसे प्रेरणा मिलती है। वास्तवमें शिवानी स्वातंत्र्योत्तर कालकी उपन्यासकार है। लेकिन उनका बचपन तथा किशोरावस्था स्वातंत्र्यपूर्व कालमें बीती है। कुमाऊँ अंचलमें पलने-बढ़नेके कारण वहाँके जनजीवनसे पूर्णत: परिचित है। उनके उपन्यासोमें स्वतंत्रता आंदोलन, लोगोंका देशप्रेम, उस कालके निस्वार्थ नेता,इन बातोके साथ-साथ स्वातंत्र्य प्राप्तीके बादकी स्थिति आजके स्वार्थांध नेता, भ्रष्ट शासन यंत्रणा, महँगाईसे त्रस्त जनता और दिशाहीन, आदर्शहीन नयी युवापीढ़ी आदि बातोंका चित्रण मिलता है।

तीसरे अध्यायमें शिवानीके उपन्यासोमें चित्रित वैवाहिक समस्याओंका विस्तृत चित्रण किया है। कन्याको पराया धन समझकर कन्यादान करने की प्रथा समाजमें है। माता-पिता कभी धनके लोभसे, कभी धोखेसे, तो कभी विवशतासे अयोग्य पात्रसे कन्याका विवाहकर देते हैं। ऐसे विवाहमें यदि नौजवान, सुंदर, लड़किका विवाह अनपढ़, कुरुप,

नालायक या बूढ़ेसे हो जाए तो बेचारीको जीना दूभर हो जाता है। ऐसी स्थितियों में एक तो बेचारीको सड़कर- गलकर जीवन बिताना पड़ता है, नहीं तो कभी-कभी वह विद्रोहिणी बनकर अनचाहे पतिकी हत्याकर डालती है। कभी दुराचारिणी बन जाती है। इसके विपरीत सुंदर, पढ़े-लिखे नौजवानका विवाह किसी अनपढ़, गंवार या बदशक्ल स्त्रीसे हो जाता है। ऐसे अनमेल विवाहसे बेचारे को जीवनभर दु:ख सहना पड़ता है। शिवानीने "चौदह फेरे" "भैरवी" "रति विलाप" "पूतोंवाली" "गेंड़ा" आदि उपन्यासोंमें "अनमेल-विवाह-समस्या" का चित्रण किया है। कभी-कभी शारीरिक आकर्षण या बौध्दिक, भावनिक आकर्षणके कारण स्त्री-पुरुष प्रेम-विवाह करते हैं। ऐसा विवाह करने-वालोंको समाजकी उपेक्षा सहनी पड़ती है, घरवालोंका विरोध सहना पड़ता है। आचार-विचार, संस्कारोंमें भिन्नता हो तो आपसमें टकराव पैदा हो जाता है। यदि संघर्ष बढ़ गया, तो विवाह विच्छेद भी हो सकता है। इस प्रकारके असफल प्रेम-विवाहसे उत्पन्न समस्याओंका चित्रण "श्मशान चंदा" "गेंड़ा" "सुरंगमा" विवर्त आदि उपन्यासोंमें किया गया है।

चौथे अध्यायमें नारी समस्याओंका चित्रण किया है। यह अध्याय इस लघु-शोध प्रबंधका मेरुदण्ड है। विशेषत: शिक्षित नारी, वृध्दा नारी, अविवाहित नारी विधवा नारी तथा गुनहगार नारियोंकी समस्याओंका चित्रण इस अध्यायमें हुआ है। इस पुरुष प्रधान समाजमें पुरुष अपनी इच्छाके अनुसार बेटीका विवाह कर देते हैं। ऐसे विवाहमें यदि वर अयोग्य हो, तो पढ़ी-लिखी नारी उसे त्याग देती है। अपने पैरोंपर खड़ी हो जाती है। नहीं तो कहीं भागकर अपनी मर्जीसे विवाह करती है। कभी-कभी परिस्थितिके कारण या अपनी स्वतंत्राकी कल्पनासे

नारी विवाह बंधन स्वीकार करना नहीं चाहती। ऐसी अविवाहित नारी ढलती उमरमें एकाकीपन महसूस करने लगती है, विक्षिप्तसी बन जाती है। कभी-कभी यौनकुंठाका शिकार बन जाती है। "माणिक" "स्वयंसिध्द" आदि उपन्यासोंमें ऐसे नारी-समस्याओंका चित्रण किया गया है। वैधव्य नारीके लिए शाप है। यदि असमय पति गुजर गया तो उस विधवा स्त्रीको जो दु:ख, यातनाएँ सहनी पड़ती हैं, परिस्थितिका, समाजका सामना करना पड़ता है, इसका चित्रण "भैरवी""मायापुरी" "सुरंगमा" आदि उपन्यासोंमे किया गया है।

कभी-कभी परिस्थितिकी विवशतासे नारी अपराधिनी बन जाती है। चोरी, डकैती, भ्रूणहत्या पति हत्या ऐसे नृशंस अपराध करती है। परिणाम स्वरुप उसे जेलकी सजा भुगतनी पड़ती है। जेलसे मुक्त होनेपर समाज उसको स्वीकार नहीं करता। ऐसे अपराधिनियोंकी समस्याएँ "माणिक""रतिविलाप" "अपराधिनी" आदि उपन्यासोंमें चित्रित की गई हैं।

वृध्दावस्थामें गलितगात्र, जराजर्जर होनेपर स्त्री अपने घरवालोंपर बोझ बन जाती है। उसें संभालना घरवालोंके लिए कठिन समस्या बन जाती है, ऐसे वृध्दा नारीकी समस्याएँ "सुरंगमा" "चौदह फेरे" में चित्रीत की गई हैं। पाँचवे अध्यायमें पहाड़ी लोगोंका जीवन चित्रित किया है। पहाड़ी लोगोंके खानपान मेहमान नवाजी, धार्मिकता, अंधश्रध्दा आदि बातोंका जिक्र किया गया है "भैरवी" "चौदह फेरे" आदि उपन्यासोंमें इसका यथार्थ चित्रण मिलता है।

शिवानीके उपन्यासोंका अध्ययन करनेके बाद हमें यह मानना पड़ता है कि शिवानी एक सिध्द-हस्त लेखिका हैं। उनकी बहुभाषाज्ञान और लेखनशैलीका कमाल दिखाई देता है। पाठकोंके चित्तको बांधक रखनेकी

अद्भूत क्षमता उनकी लेखनीमें है। नारी जीवनकी गुत्थियाँ चित्रित करने में वे सफल हो गई हैं। यथार्थता और संवेदनशीलता ये उनके लेखनकी विशेषताएँ हैं। शिवानी एक चिंतनशील उपन्यासकार है, साहित्य और समाजके प्रति उन्होंने अपना दायित्व निभाया है। उनके हाथोंसे ऐसाही साहित्यसृजन होता रहे, यही मेरी हार्दिक इच्छा है।

0-0-0-0-0

परिशिष्ट

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ

- शिवानी के उपन्यास -

	उपन्यासका नाम	रचनाकाल	प्रकाशन	प्रयुक्त संस्करण
१]	मायापुरी	१९५७	हिन्दी पॅाकेट बुक्स, प्रा. लिमिटेड, शाहदरा, दिल्ली।	नवीन सरस्वती सीरीज संस्करण १
२]	चौदह फेरे	१९६०	-- " --	-- " --
३]	कृष्णकली	१९६२	-- " --	-- " --
४]	भैरवी	१९६९	-- " --	-- " --
५]	श्मशान चंपा	१९७२	-- " --	-- " --
६]	सुरंगमा	१९७९	-- " --	-- " --
७]	अतिथी	१९८७	-- " --	-- " --

[ब] लघु उपन्यास

१]	कैंजा	१९७५	हिन्दी पॅाकेट बुक्स, प्रा. लिमिटेड, शाहदरा, दिल्ली.	नवीन सरस्वती, सीरीज संस्करण १
२]	विषकन्या	१९७७	-- " --	-- " --
३]	रतिविलाप	१९७७	-- " --	-- " --
४]	माणिक	१९७७	-- " --	-- " --

५]	रश्मा	१९७७	हिन्दी पॉकेट बुक्स, प्रा. लि. शाहदरा, दिल्ली.	नवीन सरस्वती, सीरीज संस्करण १
६]	गैंड़ा	१९७८	-- " --	-- " --
७]	किशुनुली का दूँाट	१९७९	-- " --	-- " --
८]	विवर्त	१९८५	-- " --	-- " --
९]	तीसरा बेटा	१९८५	-- " --	-- " --
१०]	पूतोंवाली	१९८६	-- " --	-- " --
११]	करिए छिमा	१९८९	-- " --	-- " --

[क] <u>संस्मरण</u>

१]	वातायन	१९७५	हिन्दी पॉकेट बुक्स, प्रा. लि. शाहदरा, दिल्ली	नवीन सरस्वती, सीरीज संस्करण १
२]	जालक	१९७६	-- " --	-- " --
३]	मेरा भाई	१९८६	-- " --	-- " --
४]	यात्रिक	१९८६	-- " --	-- " --
५]	झरोखा	१९८६	-- " --	-- " --

- 0 - 0 - 0 - 0 -

- संदर्भ-ग्रंथ -

१]	बदलते परिप्रेक्ष्य	नेमिचंद्र जैन	राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. दिल्ली-६.
२]	शांतिनिकेतनसे - शिवालिक	शिवप्रसाद सिंह	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ९ अलिपुरपार्क प्लेस, कलकत्ता - २७
३]	आधुनिक युगके - वातायनसे	अशोककुमार गुप्ता	पुस्तक प्रचार प्रकाशन प्रेम गली, गाँधीनगर, दिल्ली - ३१
४]	हिंदी उपन्यास स्थिति एवं गति	डॉ. हेमराज कौशिक	नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२
५]	उपन्यास समीक्षाके- नये प्रतिमान	डॉ. दंगल झाल्टे	दरियागंज, नईदिल्ली-२
६]	हिंदी साहित्यका- इतिहास	ले. रामचंद्र शुक्ल	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
७]	समसामयिक हिंदी - साहित्य	सं. हरिवंशराय - बच्चन	३५ फिरोज शाहरोड, नई दिल्ली १५००१.
८]	आधुनिक हिंदी उपन्यास और अजनबीपन	विद्याशंकर राम	सरस्वती प्रकाशन, नया बेरहना, इलाहाबाद।
९]	हिंदी उपन्यास - उद्भव और विकास	प्रतापनारायण टंडन-	कल्पकार प्रकाशन, ५२ बादशाहनगर लखनऊ -७

१०]	समीक्षालोक	डॉ. दशरथ ओझा	समुद्य प्रकाशन, ५९४, उन्नीसवाँ रास्ता, खार बंबई - ५२.
११]	समीक्षा शास्त्र	डॉ. दशरथ ओझा	राजपाल ॲण्ड सन्स, दिल्ली।
१२]	हिन्दी साहित्य- आठवाँ दशक	पुष्पपाल सिंह	सूर्य प्रकाशन नई सडक, दिल्ली - ६.
१३]	स्वातंत्र्योत्तर - हिंदी उपन्यास साहित्यमें जीवन दर्शन.	डॉ. सुमित्रा त्यागी	साहित्य प्रकाशक दिल्ली-६ प्र. सं. १९७८.
१४]	हिन्दी उपन्यासोमें ऑचलिकता की प्रवृत्ति.	डॉ. ह. के. कडवे	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपूर-१२, प्र. सं. १९७८
१५]	हिंदी उपन्यासोमे ग्राम समस्याएँ -	डॉ. ज्ञान अस्थाना	जवाहर पुस्तकालय, मथूरा-२, प्र. सं. १९७९.
१६]	हिन्दु विवाह - मिर्मांसा	डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल	राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर-तंस्करण १९८०.
१७]	शिवानीके उपन्यासोके रचना विधान	- कु. शशिबाला पंजाबी	देवनागर प्रकाशन, घोडा रास्ता, जयपुर।

- 0 - 0 - 0 - 0 -